ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र जनवरी 2018 (प्रथम)

26 जनवरी

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

Email : aryapsharyana@yahoo.in Visit us : www.apsharyana.org

मासिक सत्संग में मुख्य वक्ता डा० राजेन्द्र विद्यालंकार अपने विचार रखते हुए।

मासिक सत्संग में अपने विचार रखते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

मासिक सत्संग में श्री बलराज कुण्डू को सम्मानित करते हुए सभा कोषाध्यक्ष, वेद प्रचार अधिष्ठाता, मुख्यवक्ता एवं श्री सुभाष सांगवान।

मासिक सत्संग में श्री रोशन आर्य को सम्मानित करते हुए सभा प्रधान, प्रस्तोता, वेद प्रचार अधिष्ठाता एवं मुख्यवक्ता।

मासिक सत्संग में डा० शमशेर सिंह को सम्मानित करते हुए सभा प्रधान, प्रस्तोता एवं मुख्यवक्ता।

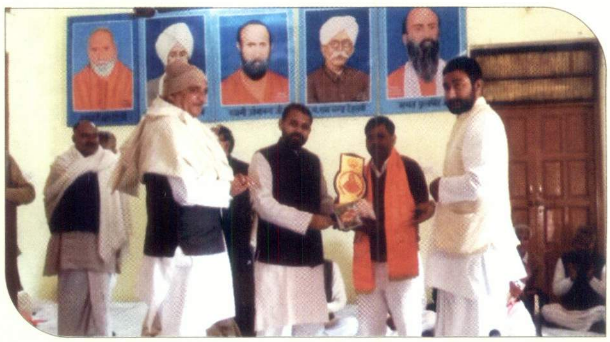

मासिक सत्संग में श्री शिवकुमार को सम्मानित करते हुए सभा प्रधान, प्रस्तोता एवं मुख्यवक्ता।

मासिक सत्संग में श्री राकेश को सम्मानित करते हुए सभा प्रधान, प्रस्तोता, वेद प्रचार अधिष्ठाता एवं मुख्यवक्ता।

मासिक सत्संग में श्री सुमित आर्य को सम्मानित करते हुए सभा प्रधान, प्रस्तोता एवं मुख्यवक्ता।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118
विक्रम संवत् 2074
दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 13 अंक 23

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जनवरी, 2018 (प्रथम)
1 से 15 जनवरी, 2018 तक

इस अंक में....

1. विश्वशान्ति का केवल एक ही मार्ग है वैदिक धर्म 2
2. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी 4
3. समस्त आयु का ज्ञान है–आयुर्वेद में 5
4. महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्राचीन भारत की संस्कृति व संस्कारों की पुनरावृत्ति करके युग की धारा ही बदल डाली 6
5. आह्वान 8
6. उस तक पहुँचने के अधिकारी बनो 9
7. राष्ट्रनिर्माण 11
8. नववर्ष का भ्रम–पहली जनवरी 12
9. प्रेरक वचन 14
10. समाचार-प्रभाग 15

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

विश्व-शान्ति का केवल एक ही मार्ग है वैदिक धर्म

❑ खुशहालचन्द्र आर्य

जैसे सत्य एक ही होता है, असत्य अनेक हो सकते हैं। दो बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा केवल एक ही हो सकती है, टेढ़ी-मेढ़ी अनेक हो सकती हैं। वैसे ही धर्म भी एक ही हो सकता है बाकी मत, पंथ, सम्प्रदाय अनेक हो सकते हैं। धर्म वह होता है जो केवल मानव मात्र ही नहीं बल्कि प्राणिमात्र की भलाई व कल्याण चाहने वाला हो। किसी भी जीव के प्रति अन्याय, पक्षपात व अत्याचार न करता हो। सब प्राणियों का पिता केवल एक ईश्वर ही है, इसलिए जितने भी प्राणी हैं, वे सभी ईश्वर के पुत्र व पुत्रियाँ हैं। पिता अपने सभी पुत्र-पुत्रियों को एक समान ही प्यार करता है, इसलिए जो धर्म ईश्वरप्रदत्त होगा वही धर्म सभी प्राणियों का हितकारी व कल्याणकारी होगा। वेद ईश्वर के बनाए हुए हैं, इसलिए वैदिक धर्म यानि वेदों के अनुसार चलने वाला धर्म ही पूर्ण मानवमात्र का धर्म हो सकता है। बाकि जितने भी धर्म के नाम से प्रचलित मत, पंथ, सम्प्रदाय हैं, वे सब किसी न किसी विशेष द्वारा चलाये हुए हैं। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है, वह चाहे कितना भी महान् क्यों न हो, उसके अल्पज्ञ होने के नाते कुछ न कुछ कमी व स्वार्थ जरूर-जरूर रहेगा। वह अपने ही मत वालों को अधिक पसन्द करेगा और दूसरों के मत वालों को कम पसन्द करेगा। यही भेदभाव लड़ाई-झगड़े की जड़ है और एक-दूसरे को अलग-अलग करती है और दु:ख का कारण है। विश्व में जितने भी मत व पंथ हैं वे सभी किसी न किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाये हुए हैं। जैसे ईसाई मत ईसा ने चलाया था। मुस्लिम मत मोहम्मद साहब ने चलाया था, पारसी मत मूसा ने चलाया था, सिख मत गुरुनानक ने चलाया था, जैनमत महावीर स्वामी ने चलाया था और बौद्धमत महात्मा बुद्ध ने चलाया था। इन मतों से विश्व का कल्याण कभी नहीं हो सकता इसलिए इन मतों को मानने से विश्व में सुख व शान्ति कभी भी स्थापित नहीं हो सकती। अब प्रश्न उठता है कि वैदिक धर्म से ही विश्व में सुख व शान्ति कैसे स्थापित हो सकती है? इसके निम्नलिखित मुख्य कारण हैं-(1) वैदिक धर्म सृष्टि के आदि में ईश्वर प्रदत्त धर्म हैं-मनुष्य में स्वाभाविक ज्ञान कम और नैमित्तिक ज्ञान अधिक। पशु-पक्षियों में स्वाभाविक ज्ञान अधिक और नैमित्तिक ज्ञान बहुत कम होता है। स्वाभाविक ज्ञान वह होता है जो जीवन चलाने के लिए आवश्यक होता है, जैसे-खाना-पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना, रोना-हंसना तथा संतान पैदा करना आदि। इन कामों का फल नहीं मिलता कारण यह हर जीव के लिए करने जरूरी हैं। दूसरा ज्ञान है नैमित्तिक ज्ञान, यह सिखाने से सीखा जाता है। यह ज्ञान मनुष्य में अधिक है, इसीलिए मनुष्य सिखाने से सीखता है। बिना सिखाए वह मूर्ख ही बना रहता है। इसीलिए ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, यह चारों वेद चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा थे, उनके हृदय में ईश्वर ने चारों वेदों का प्रकाश क्रमश: किया और लोगों को सुनाया। वैसे तो चारों वेदों का सन्देश चारों ऋषियों के मुख से सभी उपस्थित स्त्री व पुरुषों ने सुना पर ब्रह्मा ऋषि ने उन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उसने अपने शिष्यों को तथा अन्य लोगों को सुनाया। और उन लोगों ने अपने पुत्रों व पौत्रों को सुनाया। इस प्रकार यह सुनाना और सुनने की परम्परा चालू हो गई। जब तक कागज, स्याही, दवात, कलम का आविष्कार नहीं हुआ और वेद पुस्तकों में लिखा नहीं गया, तब तक यह परम्परा चलती रही। पुस्तकों में लिखे जाने के बाद यह परम्परा प्राय: समाप्त हो गई, पर दक्षिण में अभी तक भी चलती आ रही है। इसीलिए वेदों को श्रुति भी कहते हैं जिसका तात्पर्य है सुन-सुनकर सीखना। ईश्वर ने वेदों में मनुष्यों के लिए यही ज्ञान दिया है कि मनुष्य को क्या काम करने चाहिएं और क्या काम नहीं करने चाहिएं। जिस कामों को करने से मनुष्य धर्म, अर्थ, काम को धर्मानुसार यानि वेदानुसार करने से इनके फल मोक्ष को प्राप्त कर सकता है जो मानव मात्र का अन्तिम लक्ष्य है, जिसके पाने के लिए ईश्वर जीव को मनुष्य योनि में भेजता है। इसीलिए हम कह सकते हैं कि वैदिक धर्म ही एक ऐसा धर्म है जिसके अनुसार चलने से मनुष्य अपने

जीवन में स्वयं भी सुखी व प्रसन्न रह सकता है और दूसरों को भी सुखी व प्रसन्न रख सकता है। इसलिए इसी धर्म को संसार में सुख व शान्ति स्थापित करने का आधार मानते हैं।

(2) वैदिक धर्म ही प्राणिमात्र से प्रेम रखने की बात कहता है और परस्पर प्रेम से रहने की बात सिखाता है, किसी से भी भेदभाव रखने की नहीं सिखाता। कारण वैदिक धर्म मानव मात्र का धर्म है। किसी एक जाति, देश या वर्ग का नहीं है। ईश्वर सबका पिता है और यह धर्म उस पिता के द्वारा ही चलाया हुआ है। हम सब उस परमपिता परमात्मा के पुत्र व पुत्रियाँ हैं। पिता अपनी संतान का भला व कल्याण करना चाहता है इसीलिए ईश्वर ने हमारे कल्याण के लिए ही वेदों का प्रकाश चार ऋषियों के हृदय में किया। वेदों में इतिहास भी नहीं है, कारण यह आदिग्रन्थ है। इतिहास बाद में लिखा जाता है।

(3) वेदों में न कोई कुछ घटा सकता है और न कोई कुछ बढ़ा सकता है, कारण यह पूर्ण ज्ञान है और पूर्ण ज्ञानवान् ईश्वर द्वारा प्रदत्त है। बाकी हमारे धार्मिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत, गीता, मनुस्मृति आदि में ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के लिए काफी मिलावट कर दी है। परन्तु वेदों में ये स्वार्थी ब्राह्मण कोई मिलावट नहीं कर पा रहे हैं कारण इनके सस्वर बोलने में चढ़ाव-उतराव इस किस्म से हैं जिसके बोलने से मिलावट पकड़ी जाती है इससे वे मिलावट नहीं कर पाते इसलिये वह ईश्वरीय ज्ञान आज भी हमारे पास ज्यों का त्यों है। इस अद्वितीयता से यह भी सिद्ध होता है कि यह वेदज्ञान ईश्वर का है।

(4) मानव मात्र का धर्म वही हो सकता है जो सृष्टि के आरम्भ से चला हो। बाद में चला हुआ धर्म, मानव मात्र का नहीं हो सकता कारण उस धर्म के चलने से पहले भी कोई धर्म माना जाता होगा। बाद में किसी व्यक्ति द्वारा चलाया हुआ धर्म, धर्म न होकर कोई मत, पंथ व सम्प्रदाय ही है जो कोई वर्गविशेष द्वारा माना जाता है। इसलिए वैदिक धर्म जो सृष्टि के आरम्भ से चला हुआ है वही मानव मात्र का धर्म है, अन्य नहीं।

(5) वेद किसी देशीय भाषा में नहीं है, वेद संस्कृत भाषा में है जो सब भाषाओं की जननी है और सृष्टि के आरम्भ की भाषा है। अन्य धर्मग्रन्थ किसी देशीय भाषा में हैं, इसलिए वह मानव-मात्र का धर्म नहीं हो सकता।

(6) वेद, प्रकृति के अनुसार है, वेदों में प्रकृति के विरुद्ध कोई बात नहीं है। जैसे एक व्यक्ति इतना योगी, तपस्वी व पहुँचा हुआ संन्यासी है जो एक समय में ही मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास व दिल्ली दिखाई देता है। यह बात प्रकृति विरुद्ध है। एक व्यक्ति एक समय में एक ही जगह दिखाई देगा। मनुष्यों द्वारा चलाए गए मत व पंथों में अपना चमत्कार दिखाने के लिए प्रकृति विरुद्ध बातें बतलाते हैं। जैसे ईसाई लोग कहते हैं कि ईसा की शरण में आ जाओ, तुम्हारे सारे पाप धुल जायेंगे और मोक्ष के अधिकारी बन जायेंगे। मुस्लिम भाई कहते हैं कि मोहम्मद साहब ने चिटली ऊंगली से चांद के दो टुकड़े कर दिये। पौराणिक भाई इस मामले में सबसे आगे हैं। वे तो कहते हैं कि हनुमान जी ने बचपन में सूर्य को मुख में रख लिया, कुन्ती को कर्ण कान से हुआ था, भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को चिटली उंगली से उठा लिया। यह सब काम प्रकृति विरुद्ध है इसलिए यह सब असम्भव है। इसलिए यह सब अंधविश्वास है। वैदिक धर्म इन सब बातों को नहीं मानता। ये धर्म केवल बुद्धि, तक व विज्ञानसम्मत हैं, उसी बात को मानता है जिसे हर व्यक्ति को मानना चाहिए जो यथार्थ है।

संपर्क-गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7 फोन 033-22183825, 64505013, ऑफिस-26758903

सूचना

सभी शिक्षण संस्थाओं एव व्यापारिक प्रतिष्ठानों को सूचित किया जाता है कि अपनी शिक्षण संस्थाओं एवं व्यापारिक प्रतिष्ठान अपने विज्ञापन आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका में देकर लाभ उठाएं। इस पत्रिका के हजारों पाठक हैं तथा देश के विभिन्न राज्यों में इसका प्रचार-प्रसार है।

विज्ञापन शुल्क

पूरा पृष्ठ रंगीन एक अंक का शुल्क 5000/- रुपये

अन्दर के पृष्ठ रंगीन एक अंक

¼ पृष्ठ का शुल्क 2000/- रुपये

अन्दर के पृष्ठ रंगीन एक अंक

½ पृष्ठ का शुल्क 3000/- रुपये –प्रबन्धक

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

एकादश समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

प्रश्न 744. आर्यावर्त कैसा देश है?

उत्तर–आर्यावर्त देश ऐसा देश है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम

सुवर्ण भूमि है, क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसलिए सृष्टि के आदि में आर्य लोग इस देश में आकर बसे। जितने भूगोल में देश हैं, वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं। पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।

प्रश्न 745. सृष्टि से लेकर 5000 वर्ष पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य था, इसका क्या प्रमाण है?

उत्तर–महाराजा युधिष्ठिर जी के राजसूय यज्ञ और महाभारत युद्ध पर्यन्त यहाँ के राज्याधीन सब राज्य थे। चीन का भगदत्त, अमेरिका का बभ्रुवाहन, यूरोपदेश का विडालाक्ष अर्थात् मार्जार के सदृश आंखों वाला, यवन जिसको यूनान कह आये और ईरान का शल्य आदि राजा राजसूय यज्ञ और महाभारत युद्ध में सब आज्ञानुसार आये थे। जब रघुगण राजा थे, तब रावण भी यहां के अधीन था। जब श्री रामचन्द्र के समय में विरुद्ध हो गया तो उसको श्री रामचन्द्र जी ने दण्ड देकर राज्य से नष्ट कर उसके भाई विभीषण को राज्य दिया था। स्वायम्भुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य था।

प्रश्न 746. आर्यावर्त देश से पूरे भूगोल में विद्या गई–ऐसा कोई प्रमाण दें।

उत्तर–मनुस्मृति, जो सृष्टि के आदि में हुई है, उसका प्रमाण है–इसी आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुए ब्राह्मण अर्थात् विद्वानों से भूगोल के मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, दस्यु, म्लेच्छ आदि सब अपने-अपने योग्य विद्या, चरित्रों की शिक्षा और विद्याभ्यास करें–

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

प्रश्न 747. महाभारत के पश्चात् इस आर्यावर्त का पतन कैसे प्रारम्भ हुआ?

उत्तर–स्वायम्भुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् आपस के विरोध से लड़कर नष्ट हो गए। क्योंकि इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता। और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत-सा धन असंख्य प्रयोजनों से अधिक होता है तब आलस्य, पुरुषार्थहीनता, ईर्ष्या-द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं। जैसे कि मद्य-मांस सेवन, बाल्यावस्था में विवाह और स्वेच्छाचार आदि दोष बढ़ जाते हैं। सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्यकुल में ही हुए थे। अब इनके संतानों का अभाग्योदय होने से राजभ्रष्ट होकर विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहे हैं।

प्रश्न 748. आर्यावर्त के कुछ चक्रवर्ती राजाओं के नाम बतायें।

उत्तर–सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलयाश्व, यौवनाश्व, वद्ध्र्यश्व, अश्वपति, शशबिन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, ननक्तु, शर्याति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन, मरुत्त और भरत सार्वभौम=सब भूमि में प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजाओं के नाम हैं। वैसे स्वायम्भुवादि चक्रवर्ती राजाओं के नाम मनुस्मृति, महाभारतादि ग्रन्थों में भी स्पष्ट लिखे हैं। इनको मिथ्या करना अज्ञानी और पक्षपातियों का काम है।

प्रश्न 749. जो आग्नेयास्त्र आदि विद्या लिखी हैं, वे सत्य हैं वा नहीं?

उत्तर–वे बात सच्ची हैं। ये अस्त्र भी थे, क्योंकि पदार्थ विद्या से इन सब बातों का सम्भव है।

क्रमशः अगले अंक में......

समस्त आयु का ज्ञान है—आयुर्वेद में

❑ डॉ० बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा (उ.प्र.)

आयुर्वेद एक भारतीय चिकित्सा पद्धति है। भारत सरकार का ध्यान 1947 के बाद अब इस ओर गया है। आयुर्वेद जगत् में यह अत्यन्त प्रशंसा की बात है। दिल्ली में जैसा कि ऑल इण्डिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैडिकल साईंसिज है, वैसा

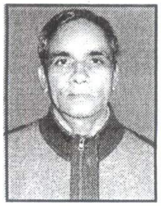

ही विशाल आयुर्वेद का आयुर्विज्ञान संस्थान का शिलान्यास माननीय प्रधानमंत्री जी ने किया, जबकि इसकी सूचना टी.वी. आदिद्वारा 16 अक्तूबर को दी गई तो चारों ओर आयुर्वेद के प्रशंसकों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

स्वतन्त्रता का अर्थ तभी सार्थक होगा जब हम अपनी संस्कृति व धरोहरों को सम्मान देंगे। हिन्दी हमारी मातृभाषा है हम सभी को हिन्दी भाषा के महत्त्व को समझना चाहिए। आज संस्कृत भाषा की उपेक्षा हो रही है। जबकि हमारे प्राचीन ग्रन्थ पाण्डुलिपियां, पुस्तकें तथा संसार की सर्वप्रथम पुस्तक वेद संस्कृत भाषा में ही हैं।

आयुर्वेद ऋग्वेद का उपवेद है जिसमें समस्त आयु का ज्ञान है, विज्ञान है, विशेष बात यह है कि इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं। शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम नहीं करती। हमारे शरीर की प्रकृति के अनुकूल है। शरीर के लिए आत्मसात्म्य हैं, रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाली हैं, जब शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है तो रोग पास ही नहीं आते। आयुर्वेद का उद्देश्य भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। चरक में लिखा है-

स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणम्, आतुरस्य रोग प्रशमनम् च।

अर्थात् सबके स्वास्थ्य की रक्षा करना तथा यदि व्यक्ति रुग्ण हो जाये तो रोगों को दूर करना। ऐसा उद्देश्य आयुर्वेद का है। आयुर्वेद हमारे जीवन हेतु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और आज आयुर्वेद आधुनिक चिकित्सा का स्थान ले सब पर उपकार कर रही है।

आयुर्वेद में पञ्चकर्म की अपनी उपयोगिता है, जिसमें रोगी को स्नेहन स्वेदन वमन विरेचन व नस्य आदि क्रियाओं द्वारा शुद्ध किया जाता है। पश्चात् काष्ठौषधियों एवं रसौषधियों द्वारा चिकित्सा की जाती है। आयुर्वेद का विज्ञान अति विस्तृत है, जिसमें काय एवं शल्य दोनों चिकित्सा है। काय चिकित्सा में काष्ठ व रस औषधियां पञ्चकर्म द्वारा व शल्य में शस्त्र कर्म द्वारा चिकित्सा कर रोगी को रोगमुक्त किया जाता है।

आयुर्वेद का आज कितना महत्त्व है आयुर्वेद का अध्ययन करके ही पता चलता है। स्वस्थ व्यक्ति की परिभाषा का अति सुन्दर शब्दों में वर्णन है-

समदोषः समाग्निश्च समधातु मलक्रिया।
प्रसन्नात्मेन्द्रिय मनः स्वस्थ इत्यभिधीयते॥

अर्थात् रोगी के वात पित्त कफ आदि दोष सामान्य हों, अग्नि सामान्य हो, अर्थात् चय अपचय क्रिया विधिवत् हो, भूख उचित रूप से लगती हो, भोजन का पाचन भली प्रकार हो, उस भोजन के रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र आदि भली प्रकार बन रहे हों, अर्थात् धातुओं का पोषण सम्यक् रूप से हो रहा हो, मल-मूत्र का उत्सर्जन सम्यक् रूप से हो तो ऐसा व्यक्ति आधुनिक आयुर्वेद में स्वस्थ तो होता ही है परन्तु पूर्णतः स्वस्थ तभी होगा जब उसका आत्मा व मन भी प्रसन्न हो। अर्थात् पूरा शरीर ठीक हो, शारीरिक क्रियाएं उचित हों और मन प्रसन्न न हो तो वह पूरी तरह तो स्वस्थ नहीं कहा जा सकता। व्यक्ति तभी स्वस्थ होगा जब शरीर के साथ मन भी प्रसन्न हो।

आयुर्वेद अपने आप में पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। ऐसा कोई रोग नहीं जिसका इसमें इलाज न हो। प्रत्येक रोग का इलाज आयुर्वेद से ही संभव है। इस किसी अन्य की सहायता की भी आवश्यकता नहीं है। अपने आप में जो आवश्यक ज्ञान होना चाहिए सब इसमें है।

धन्वन्तरि त्रयोदशी के शुभ अवसर पर भारतीय आयुर्वेद चिकित्सा पर अन्तर्राष्ट्रीय आयुर्वेद आयुर्विज्ञान संस्थान की सौगात जनता के लिए अनुपम उपहार है। इससे आज बढ़ते हुए रोगों, प्रदूषण के दुष्प्रभाव व व्यक्तियों की घटती रोग प्रतिरोधक क्षमता का निराकरण हो सकेगा और मनुष्य की जीवनीय शक्ति बढ़कर सबको स्वास्थ्य सम्बन्धित सुविधाएं सुलभ होंगी। आयुर्वेद का पुनः जन-जन में उपयोगिता का संचार बढ़ेगा।

आधुनिक रासायनिक औषधियों से जहाँ रोगी में विषाक्तता (टांक्सिसिटी) बढ़ रही है, दुष्प्रभाव बढ़ रहे हैं, रोग प्रतिरोधक क्षमता घट रही है, उसके विपरीत आयुर्वेद प्राकृतिक स्तर पर शरीर के सात्म्य अर्थात् अनुकूल है, दुष्प्रभाव रहित है। विषाक्तता को और कम करती है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को घटाती नहीं अपितु बढ़ाती है, जीवनीय शक्ति की वृद्धि करती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्राचीन भारत की संस्कृति व संस्कारों की पुनरावृत्ति करके युग की धारा ही बदल डाली

❑ पं. उम्मेदसिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

महर्षि दयानन्द जी का स्वप्न था कि बालक-बालिकाओं का जन्म से ही 15 संस्कारों द्वारा निर्माण किया जाये तो वह युवा होने पर युग को ही बदल देंगें, क्योंकि पुरानी पीढ़ी का स्थान आज के जन्मे बच्चे लेंगे और वे जैसे होंगे वैसा ही युग होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने परतन्त्र भारत में व्याप्त सम्पूर्ण धार्मिक व सामाजिक व राजनैतिक अन्धविश्वास को मिटाने की चुनौती को स्वीकार कर वैचारिक एवं वैदिक संस्कारिक क्रान्ति को जन्म दिया।

महाभारत युद्ध के बाद भारतवर्ष का इतिहास ही बदल गया था। भारतवासी अपनी प्राचीन वैदिक संस्कार संस्कृति व सम्यता को भूल गये थे। परिणाम स्वरूप विश्वगुरु भारत अराजकता और उच्च चरित्र संस्कारहीनता के कारण विदेशियों का गुलाम बन गया था और मानव जीवन के निर्माण के 16 संस्कार प्रायः लुप्त हो गये थे। यदि कहीं दो तीन संस्कार बने हुए भी हैं तो यही वैदिक रूप में है कहीं अवैदिक रूप में प्रचलित हैं और वैदिक संस्कार केवल आर्यसमाज के पुरोहितों द्वारा संस्कारविधि के अनुसार किये जाते हैं। चतुर अवसरवादी अनार्ष ज्ञान रखने वाले धर्म के ठेकेदारों ने विकृत धर्म और संस्कार व संस्कृति के द्वारा अपना-अपना मत बनाकर दुकानें खोल रखी थीं। जन साधारण भारतवासी बुरी तरह से इन धर्म के ठेकेदारों के चंगुल में फंस गये थे।

इतिहास गवाह है जब-जब मानवों ने ईश्वरीय नियम व सृष्टिक्रम व वैदिक संस्कारों की अवहेलना की तब-तब मनुष्यता मरती चली गई। आत्मरक्षा, धर्मरक्षा, समाजरक्षा, और राष्ट्रीय-रक्षा के आधार वैदिक संस्कार होते हैं और जब यह ही समाप्त हो गये थे या विकृत बन गये, तो विदेशियों ने इस गिरावट का लाभ उठाया और विश्वगुरु भारत को गुलाम बनाकर नोंच डाला। इस भीषण विभीषिका से बचाने की किसी भी धर्मगुरु को कोई चिन्ता नही थी, चिन्ता थी तो केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने की।

ईश्वर की कृपा से अठारवीं सदी में युगपुरुष महर्षि दयानन्द जी का जन्म हुआ था यह भी सत्य है कि युगपुरुष संसार के कल्याण के ही लिए जन्म लेते हैं। यह भी सत्य है कि जब-जब ईश्वरीय वैदिक धर्म समाप्त होने लगता है तो चारों ओर अनैतिकता का वातावरण पैदा हो जाता है। तब ईश्वरीय व्यवस्था से महापुरुष सीधे मोक्ष से लौटकर अधर्म का नाश करने को जन्म लेते है। वह कर्मयुक्त जीव होते है, संसार के बन्धनों में नही फंसते हैं और संसार को सत्य मार्ग दिखाते-दिखाते अपना जीवन तक बलिदान कर देते हैं।

महर्षि दयानन्द जी ने भी रणक्षेत्र में उतरकर सर्वप्रथम वेदों के रूढ़ि अर्थों पर प्रहार करके उनको इतिहास परक न मानकर यौगिक अर्थ किये और उन्होंने समझा था कि सम्पूर्ण भारत में संस्कारहीनता का कारण वेदों के अर्थों का गलत अर्थ करके समाज को दिशाहीन कर दिया है। उन्होंने तत्कालीन तमाम विद्वानों से शास्त्रार्थ किये और वेदों के अर्थों को संसार के सामने रखा। यह एक अद्भुत वैचारिक क्रान्ति थी। जमाने के साथ न चलकर जमाने की गर्दन पकड़कर अपने पीछे चलाया। एक नई वैचारिक क्रान्ति का जन्म हुआ।

संस्कारविधि : महर्षि दयानन्द ने समाज मे चल रहे विकृत संस्कारों को वेदानुकूल बनाने हेतु संस्कार विधि का निर्माण किया और संस्कारविधि में सोलह संस्कारों को पूर्ण मानव बनाने की योजना तैयार की। उन्होंने समझा संस्कार जन्म से ही बदले जा सकते है उन्होंने संस्कार विधि में संविधान किया कि बालक माता के गर्भ से ही तीन संस्कार होने चाहिए वह थे गर्भधान, पुंसवन तथा सीमन्तोन्नयन संस्कार और जन्म होने के पश्चात् जातकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्णभेद, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टि कर्म जो दूसरा किया जाता है। ये मानव को पूर्ण मानव बनाते हैं।

उनकी योजना थी कि यदि बालकों को उक्त संस्कारों की भट्टी में तपाया जाए तो युवा होने पर 25 वर्ष की अवस्था में एक नये युग का निर्माण हो सकता है, क्योंकि पुरानी पीढ़ी

के स्थान नई पीढ़ी लेती है। यदि समस्त परिवार सोलह संस्कारों को विधिवत् करने लगेंगे तो एक आदर्श युग का निर्माण प्रारम्भ हो जायेगा और वैदिक संस्कारों के चलने से तमाम अनार्ष साहित्य मान्यतायें व क्रियायें समाप्त हो जायेंगी।

सत्यार्थप्रकाश का निर्माण : महर्षि दयानन्द जी ने अनार्ष ज्ञान कर्मों को समाप्त करने के लिए कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में चौदह सम्मुलास पूर्णरूप से मानव बनाने का निर्देश दिया। सत्यार्थप्रकाश ने समाज में एक हलचल मचा दी। कथित धर्म के ठेकेदारों की चूलें हिलाकर रख दी। संसार सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर आश्चर्यचकित रह गया कि अब तक संसारवासियों को कैसे मूर्ख बनाया जा रहा था। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ ने एक नया इतिहास ही रच दिया। सत्य ज्ञान प्राप्त करा दिया।

आर्यसमाज का गठन : युगपुरुष दूरदर्शी होते हैं, महर्षि जी ने समझा कि यदि सोलह संस्कारों का चलन नियमित होता रहे और और आर्ष विचारों का प्रचार सदैव होता रहे, उसके लिये एक आर्ष संगठन ही होना चाहिए। उन्होंने कोई भी प्रचलित मत या नया मत न बनाकर आर्यसमाज का गठन किया या यों कहें महाभारत के पश्चात्, प्राचीन आर्य संगठन की पुनरावृत्ति की और जब तक संसार में आर्यसमाज रहेगा आर्ष विचारों का प्रकाश पुंज प्रकाशित होता रहेगा। यह भी मानव निर्माण योजना थी।

गुरूकुलों का निर्माण : महर्षि दयानन्द जी के वेदों के आर्ष विचारों से प्रभावित होकर आर्यों ने पूर्ण मानव बनने हेतु भारत में प्राचीन स्तर पर गुरुकुलों की स्थापना कर दी।

महर्षि दयानन्द क अनुयायियों से निवेदन : महर्षि दयानन्द जी ने मानव निर्माण की पूर्ण योजना हम आर्यों के समक्ष रखी। ज्यों-ज्यों आर्यसमाज की उमर बढ़ रही है, वैसे-वैसे हम आर्यसमाज के अनुयायी महर्षि के सिद्धान्तों से हटते जा रहे हैं। उन्होंने कल्पना की थी इस योजना से सारा संसार आर्य बन जायेगा, किन्तु हम स्वयं पूर्ण आर्य नहीं बन पा रहे हैं। हम अपने हृदय पर हाथ रखकर सोचें क्या हम अपने बालकों के पन्द्रह संस्कार कर रहे हैं। 16वां तो अन्तेष्टि कर्म परिवार करता है। आर्यों के परिवार भी पाश्चात्य सभ्यता के शिकार होते चले जा रहे हैं। केवल तीन चार संस्कार ही अधिकांश आर्यों के घरों में होते हैं। आर्यसमाज के 141 वर्षों में हमने क्या खोया क्या पाया ?

आज संन्यासी, वानप्रस्थ व प्रतिनिधि सभायें व प्रमुख आर्य अपनी-अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने में संघर्षरत हैं। हम आर्य, आर्यसमाज की आत्मा पर आघात कर रहे हैं। उचित मार्गदर्शन संन्यासी वर्ग व नेतृत्व व पुरुषार्थी आर्य अच्छी प्रकार कर सकते हैं। आइये, हम आज के आर्यसमाज को गति देने के लिए, महर्षि दयानन्द जी के उक्त सिद्धान्तों पर चलेंगे तो निश्चय ही भविष्य में सम्पूर्ण भारत आर्य बन जायेगा या अपने विचारों को बदलने पर मजबूर हो जायेगा।

आज के संस्कार

आज भारत की शिक्षा पद्धति का उद्देश्य भौतिक है, शिक्षा से मानव में सत्य व अध्यात्म संस्कार बनता है। आज नैतिक शिक्षा का आधार संसार खोता जा रहा है। जब युवक पढ़-लिखकर कार्य क्षेत्र में उतरते हैं तो कोई डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, वकील, साइंटिस्ट बनता है। उसमें अपने व्यवसाय के प्रति आदर्श सत्यपथ के संस्कार न होने से वह अपने-अपने पदों में भ्रष्टाचार करना शुरू कर देते हैं और सारा सामाजिक वातावरण दूषित हो जाता है। समाज भ्रष्टाचार की दलदल में फंसता चला जाता है और मानव शिक्षा का आधार व्यवसायी हो गया है और ईश्वरीय वैदिक संस्कार लुप्त होते जा रहे हैं। अनेक मत-मतान्तरों के परिणामस्वरूप कारण आपसी विवादों में उलझकर मानवता को खोते जा रहे हैं।

गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून उत्तराखण्ड।
मो0-9411512019, 9557641800

श्री विक्रम सिंह राड़ सुपुत्र श्री बलजीत सिंह यदि आप सबको कहीं मिलें, तो कृपया आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक को सूचित करें।

फोन : 01262-216222

मो० 89013 87993

श्री विक्रम सिंह राड़

सुपुत्र श्री बलजीत सिंह

म०नं० 235, डिफैंस कॉलोनी, हिसार

आह्वान

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

अग्नि सर्वत्र है। प्रकट होने से पूर्व भी है। जब हम उसे प्रकट करने की इच्छा करते हैं, तो रगड़, घर्षण से उसे प्रकट करते हैं। इसी प्रकार मन से यज्ञकर्म का शुभ

संकल्प लेकर यज्ञाग्नि का आह्वान कर उसे प्रकट करते हैं। '**मन**' के लिए यजुर्वेद में '**यज्ञस्तायते**' आया है, जिसका अर्थ स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास में '**उस योगरूप यज्ञ को जिससे बढ़ाते हैं**' यह किया है। इस प्रकार जब हम मन से परमात्मा रूपी अग्नि का हृदयाकाश में प्रकट होने का संकल्प करके मंत्र विचार से उसका आह्वान करते हैं तो वह प्रकट हो जाता है और आत्मा उसका साक्षात्कार करता है। उसके किस स्वरूप का? सच्चिदानन्द स्वरूप का। वेदमन्त्रों में '**धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।**' तथा '**देवो देवेभिरागमत्**' इसी आह्वान और प्रकट होने का विचार है। जैसे गोताखोर जल में डुबकी लगाकर ऊपर आता तथा पुनः डुबकी लगाता, इस प्रकार बार-बार ईश्वर के स्वरूप में मग्न होना, महर्षि का यह संदेश मन से विचारों के बार-बार घर्षण का ही तो संदेश है, जिससे आत्मा प्रकट हो। महर्षि का महा उपकार यह कि जिन विचारों के मन्थन से वह अग्नि प्रकट हो, वे विचार भी हमारे सामने प्रकट कर गए। इन्द्रिय और उसके विषयों का ज्ञान, मन, आत्मा का ज्ञान, प्राणायाम की विधि पर प्रकाश डाला। ईश्वरस्तुति-प्रार्थना-उपासना के आठ मन्त्रों का तो ऐसा विधान कि आर्य बालकों को भी अर्थ सहित कण्ठस्थ हुए सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास में स्तुति, प्रार्थना के मन्त्र देकर उनका अनुवाद किया। उपासना के लिए उसका स्वरूप सच्चिदानन्द हमारे सामने प्रकाशित किया। '**गायत्री मन्त्र**' का अर्थ हमें पता है। इस सामग्री का प्रयोग करता हुआ भी मेरे जैसा कोई साधारण उपासक अभ्यास करे तो पर्याप्त लाभ हो। पहले आसन लगाकर, इन्द्रियों को बाह्यविषयों से हटाकर, मन को एकाग्र कर, स्वयं को आत्मा मान उसके लिंगों का चिन्तन कर, फिर ईश्वरस्तुति-प्रार्थना-उपासना मन्त्रों का अर्थ पूर्वक जप, सातवें समुल्लास में आए इस विषय के मन्त्रों का जप, गायत्री का जप, फिर उसी के स्वरूप में मग्न होना यह क्रमशः हृदय में करते जाएं, जो स्थान महर्षि ने दोनों स्तनों के मध्य निर्दिष्ट किया है। अन्य आप बड़े विद्वानों, अभ्यासियों से निर्देश पा सकते हैं या जहाँ आपको उन्नति प्रगति हो रही है, वैसा करते रहें। इस प्रकरण के विषय में पढ़ते हुए मेरे सामने एक समाधान आया, जिसे आप लोगों के साथ बांटना चाहूँगा। श्रीयुत् '**जिज्ञासु**' जी के साहित्य में श्रीकृष्ण शास्त्री पौराणिक व पं० शान्तिप्रकाश के एक शास्त्रार्थ विषय में पढ़ा जहाँ पौराणिक ने कहा कि '**आर्याभिविनय**' पुस्तक में यह लिखा है कि आर्यों का परमात्मा सोमरस के प्याले गटागट करके पीता है। पं० शान्तिप्रकाश ने ये शब्द सभापति को लिखने के लिए कहे तथा ज्यों के त्यों शब्द '**आर्याभिविनय**' में दिखाने के लिए कहे। पं० शान्तिप्रकाश की जीत हुई। यह थी आर्यों की सूझबूझ। शास्त्रीय भाषा को न समझने वालों को ऐसा ही उत्तर देते थे। यह उनकी श्रद्धा से उत्पन्न तर्क का परिणाम था।

लेखक की भाषाशैली को कुटिलता, धूर्त्तता के चलते गलत अर्थ में प्रयोग करते हैं। भाषा शैली के कारण ही प्रकरणानुसार करो को कराओ, कीजिये को करवाइये पढ़ना-समझना चाहिए। सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास में '**असतो मा सद्गमय...**' के अनुवाद से यह और स्पष्ट हो जाता है। वहाँ अनुवाद देखिए-'**हे परमगुरो परमात्मन्! आप हमको असत् मार्ग से पृथक् कर सन्मार्ग में प्राप्त कीजिये। अविद्यान्धकार को छुड़ा के विद्या रूप सूर्य को प्राप्त कीजिये....।**' इस पर भी न कोई समझे तो वह खाखी ही तो है, वही खाखी जिसका वर्णन स्वामी जी ने किया है जो '**श्रीगणेशाय नमः**' के स्थान पर '**स्त्रीगनेसाजनमे**' घोखता है, समझाने पर भी नहीं मानता। रामपाल दास जैसे गुरु और उनके चेले ऐसे ही खाखी होते हैं।

उस तक पहुँचने के अधिकारी बनो

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहानामण्डी (सोनीपत)

प्रत्येक मनुष्य अपने उद्देश्य तक पहुंचने की योग्यता रखता है। दासता के जुए में जिनकी गर्दन है वे कभी आशा नहीं कर सकते कि उनमें से कभी भी कोई राजा बनेगा। अमरीका का एक बूट साफ करने वाला लड़का भी आशा

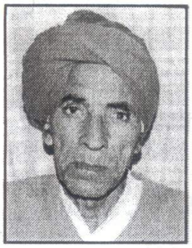

करता है कि सम्भवत: वह किसी समय अपने देश का राष्ट्रपति बन जाए। संसार में कोई ऐसा जीव नहीं है जो अपने उद्देश्य तक न पहुंच सके। मार्ग सबके लिए एक जैसा है। उसकी कठिनतायें और सुगमतायें राजा और प्रजा, विद्वान् व मूर्ख सबके लिए एक जैसी है। हाँ, भेद अपने कर्मों का है। गुसाईं तुलसीदास जी कहते हैं-

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा,
जो जस करहिं सो तस फल चाखा॥

'जैसी करनी तैसी भरनी'। यह नियम सबके लिए है तब अपने कर्त्तव्य के पालन से ही अपने उद्देश्य की ओर कदम उठ सकता है। उस वास्तविक कर्त्तव्य की पूर्ति से मनुष्य को रोकने के लिए इस संसार में अनेक प्रलोभन हैं। एक-एक पग पर बीसों विषय जीवात्मा को अपनी ओर खींचते हैं और इस मोह में फंसकर पग-पग पर ठोकरें खाता है। जब इस प्रकार अनेक प्रलोभन रास्ते में हों तो मनुष्य अपने उद्देश्य की ओर कैसे चल सकता है?

इसका आसान उपाय भी श्रीकृष्ण भगवान् बताते हैं। अगर तुम अपने कर्त्तव्य को पूरा करने में दत्तचित्त होना चाहते हो तो सबसे पहले सम्पूर्ण आत्मज्ञान के तत्त्व को समझो। सारा जगत् कहाँ से आया? क्या इसके अन्दर स्वयं बनने की शक्ति है? जड़ जगत् कैसे बन सकता है और कैसे स्वयं बिगड़ भी सकता है? इसलिये इसके अन्दर कोई चेतन शक्ति अवश्य काम कर रही है। जब तक हम सारे जड़ जगत् में एक ही नियम का परिपालन होते देखते हैं तब हमें कोई सन्देह नहीं रहता कि यह चेतन शक्ति हर जगह व्यापक है। कोई सांसारिक अवस्था उसकी उपस्थिति से खाली नहीं है गुलाब के फूल को यदि सुन्दरता मिली है तो उसने उस सुन्दरता की रक्षा के लिए उसके चारों ओर कांटों की बाड़ लगाई है। प्रभु ने हर वस्तु के अन्दर चेतनता का प्रकाश किया है। इसलिये जो बुद्धिमान मनुष्य अपने कर्त्तव्य को समझ लेता है उसके लक्ष्य को सांसारिक प्रलोभन बिगाड़ नहीं सकते। व्यापक परमात्मा की उपस्थिति को हर स्थान पर अनुभव करने वाला मनुष्य अपने विषय की ठोकर से बचकर अपना कर्त्तव्य पूरा करता हुआ, सीधा अपने लक्ष्य की ओर चला जाता है। वह मार्ग में एक सुन्दर मनुष्य को देखता है, एक पल के लिए ठहर जाता है परन्तु फौरन उसके मन में विचार उठता है कि आकृति दस साल बाद बिल्कुल बदल जायेगी यदि कोई रोग लग जाये तो सम्भवत: एक दिन में जमीन आसमान का अन्तर आ जाये। मननशील व्यक्ति अपने मन में सोचता है कि इसके अन्दर सुन्दरता कहाँ से आई? क्योंकि यदि इसका यह वास्तविक गुण होता तो इसमें परिवर्तन न आता। फिर क्यों उस सौन्दर्य के स्रोत की ओर चलें जिससे कि इस तुच्छ पंचभूतों के शरीर ने सुन्दरता प्राप्त की है। इस विचार में पूर्ण रूप धारण किया और बुद्धिमान् पुरुष आगे चल देता है, इस प्रकार अपने लक्ष्य को समझकर अपने कर्त्तव्य का सहारा ले लिया है। जिसने अपने लक्ष्य परमात्मा को बनाया है और उसे सारे विश्व की माता अनुभव किया है, वह सांसारिक विषयों के अन्दर कैसे फंस सकता है? हर सौन्दर्य के अन्दर वह माता का सौन्दर्य देखता है और प्रत्येक आकर्षण पदार्थ में उसे माता का प्रेम नजर आता है। न केवल यही, बल्कि कष्ट और क्लेश में भी उसे पिता के न्याय का हाथ दिखाई देता है। फिर उसके समीप न मोह आता है, न शोक और वह आदर्श मनुष्य सीधा परमपद की ओर चल देता है।

प्रिय पाठकगण! अपने कर्त्तव्य को समझो। वही तुम्हारा धर्म है। परमात्मा की भक्ति और उसकी पूजा तुम्हें जीवन उद्देश्य की ओर ले चलेगी। हम उसकी पूजा कैसे करें? किस वस्तु में वह व्यापक नहीं है। और कौन-सी वस्तु है जो उसकी नहीं है? उसके लिए हम बाहर से भेंट क्या लायेंगे? इसलिये तो वेद में कहा है कि मन, वचन और कर्म से किया हुआ सब कुछ परमात्मा को अर्पण करो। यहाँ तक कि '**आत्मा यज्ञेन कल्पताम्। यज्ञोयज्ञेन**

कल्पताम्।' फिर परमात्मा से तुम दूर न रहोगे क्योंकि परमधाम के लिये समय या दूरी रुकावट नहीं है। परमधाम तुम्हारे अन्दर मौजूद है और तुम बाहर भटक रहे हो। परमपिता के अमृत पुत्रो! अपने परम अधिकार को समझो और उस तक पहुंचने के अधिकारी बनो।

–साभार श्रद्धामृत

(अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के उपदेश)

मुश्किल नहीं है

यदि पाप में आपका दिल नहीं है,
तो ईश्वर का पाना भी मुश्किल नहीं है।
तुझे दुनियां काबू में कर लेगी नादां,
जो काबू में तेरा दिल नहीं है।
मुसाफिर है तू हार हरगिज न मंजिल,
जरा और चल दूर मंजिल नहीं है।

दोहे

रस है चारों वेद का, ओ३म् नाम अभिराम।
भाव भक्ति से जो जपे, पूर्ण होवें सब काम॥
ओ३म् नाम सबसे बड़ा, इससे बड़ा न कोय।
जो इसका सुमिरन करे, शुद्ध आत्मा होय॥
जपो मन ओ३म् को, निशदिन, वही मुक्ति का दाता है।
वही पालन करे सब का, वही सब का विधाता है॥

ईश महिमा

तीनों कालों का जिसे, पूरा यथावत् ज्ञान है।
सृष्टि सारी में प्रतिष्ठित है, वही भगवान् है॥
है स्वयं सुख रूप वह, मुक्ति दाता नाम है।
उस अनादि ब्रह्म को, श्रद्धा सहित प्रणाम है॥

प्रभुवर

तुम्हीं हो सहायक सृष्टि के नायक,
तुम्हारा कोई पार पाता नहीं है।
जन्म और मरण के न बन्धन में आते,
तुम्हारा पिता और माता नहीं है।
निराकार हो सर्वशक्ति में सम्पन्न,
तेरा रूप दृष्टि में आता नहीं है।
न सुख-शन्ति आनन्द पाए वह हरगिज,
तेरे दर पै जो सिर झुकाता नहीं है।
हम आये तेरे द्वार पर तेरे सेवक,
जो तुझसा कोई और दाता नहीं है।

ओंकार प्रभु तेरा नाम, गुण गावे संसार तमाम।
प्राण स्वरूप प्राणों का प्यारा, दूर दुःखों को करने हारा।
सुखस्वरूप सुखों का दाता, अन्त न कोई तुम्हारा पाता।
हे ईश्वर हम तुझे ध्यावें, पाप कर्म के पास न जावें।
बुद्धि करो हमारी उज्ज्वल, जीवन होवे हमारा निर्मल।
ओ३म् सकल दुःखों को टारे, सिद्ध करे सब कार्य हमारे।
विश्व खड़ा सब ओ३म् सहारे, शरण पड़े भवसागर तारे।

मैंने ईश अपना-उसे है बनाया।
है जिसने यह संसार अद्भुत रचाया।
अटल सत्य नियम पर है इसको चलाया,
मैंने ईश अपना-उसे है बनाया।
हैं जिसमें सभी योगी जन ध्यान पाते,
सभी भक्त जन जिससे आनन्द पाते,
है अमृत से भरपूर ही जिसकी छाया। मैंने ईश....।
निराकार और सर्व आधार है जो,
सकल विश्वकर्त्ता, सृजनहार है जो,
अजब जिसकी महिमा निराली है माया। मैंने ईश....।
रमा सबके अन्दर-रहे फिर भी न्यारा,
जो है भक्त वत्सल व भक्तों का प्यारा,
सुन्दर रूप जिसका है कण-कण समाया।
मैंने ईश....।
कर्मफल प्रदाता-विधाता-स्वामी,
सकल दुःख का हर्त्ता व अन्तर्यामी,
न भेद जिसका 'सेवक' किसी न है पाया। मैंने ईश....।

मन नहीं जो हाथ में, है हाथ में माला तो क्या।
चित्तवृत्ति तो शुद्ध न की मन का घुमा डाला तो क्या॥
हृदय, वाणी, कर्म में, अन्तर नहीं जब मिट सका।
प्रेम ईश्वर से नहीं, माथे को रंग डाला तो क्या॥

ईश्वर को छोड़कर, अब पूजता पाषाण है।
कितना मूर्ख हो चुका, यह आज का इन्सान है॥
कितनी भारी भूल हुई थी, क्या दिलों ने ठान लिया।
जब इस देश के लोगों ने, पत्थर को ईश्वर मान लिया॥

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थ-प्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

राष्ट्रनिर्माण

❑ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक', 602 जी.एच. 53 सैक्टर-20, पंचकूला, मो० 9467608686

किसी भी राष्ट्र की मजबूत इमारत के निर्माण के लिए आवश्यक है कि उस इमारत के निर्माण में प्रयोग होने वाली इकाई अर्थात् प्रत्येक ईंट मजबूत हो और अटूट बन्धन में एक-दूसरे के साथ जुड़ी हुई हो। जिस प्रकार इमारत के निर्माण में ईंट का मजबूत होना आवश्यक है ठीक उसी प्रकार राष्ट्र के निर्माण में उसकी प्रत्येक इकाई अर्थात् प्रत्येक नागरिक का मजबूत होना आवश्यक है। प्रत्येक नागरिक के मजबूत होने के लिए उसमें कुछ गुणविशेष होने अत्यन्त आवश्यक हैं।

अथर्ववेद के बारहवें काण्ड का प्रथम सूक्त भूमि सूक्त के नाम से सुविख्यात है और अपनी मातृभूमि अपने राष्ट्र के निर्माण के लिए एक नागरिक के रूप में जिन गुणों को धारण करना अनिवार्य बताया गया है, **'सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।'** इस मन्त्र में नागरिकों के लिए जिन आवश्यक गुणों का वर्णन किया गया है वह **बृहत् सत्यं** अर्थात् अटल सत्य निष्ठा, दूसरा **ऋतं**-अर्थात् ज्ञान, **उग्रं**-क्षात्र तेज, **तपः**-धर्म का पालन, **दीक्षा**-हर काम करने में दक्षता, ब्रह्म-ईश्वरीय ज्ञान, **यज्ञः**-परोपकार, दान और त्याग। नागरिकों के यह गुण अपनी मातृभूमि, देश व राष्ट्र का पालन-पोषण व रक्षण करते हैं। हमारी मातृभूमि हमारी धरती माता हम सभी को धारण करके हमारा पालन-पोषण और हमारे सुख के साधन हमें बड़ी सुलभता से उपलब्ध करवाती है। हमारा भी अपनी धारण करने वाली राष्ट्रमाता के प्रति कुछ दायित्व बनता है। परस्परतंत्रता के सिद्धान्त के अन्तर्गत जिस प्रकार यह भूमि, पृथिवी, भारतमाता हमें धारण कर रही है हम भी वेदमंत्र में दिए गुणों को धारण करके और आपस में सौहार्द, समरसता और प्रेम के अटूट बंधन में बंधकर भारत माता का पालन-पोषण करें।

आइये अब इन गुणों पर एक-एक कर विचार करते हैं। **बृहत् सत्यं** यानि अटल सत्य निष्ठा। हमारी निष्ठा केवल अपने राष्ट्र के प्रति हो जो भूमि हमारा पालन-पोषण कर रही है हम उसी के प्रति पूर्णतया समर्पित हों। यदि हम रहें तो यहां, खायें तो यहाँ, लेकिन गुण गाएं किसी अन्य के या फिर हमारी निष्ठा अपनी मातृभूमि के प्रति न होकर किसी अन्य देश के साथ हो तो हम कृतघ्नता दोष के अपराधी देशद्रोही कहलायेंगे। सरल शब्दों में हमारी अटल सत्य निष्ठा, सर्वस्व समर्पण केवल अपने राष्ट्र के प्रति होना चाहिए। दूसरा गुण **ऋतं** अर्थात् यथार्थ का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। इस यथार्थ ज्ञान में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद समाया हुआ है यानि हमें अपनी संस्कृति का सम्पूर्ण ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। हमारी पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति जिसका ज्ञान सृष्टि के रचयिता परमपिता परमेश्वर ने इस सृष्टि में रहने वाले समस्त प्राणियों के लिए एक नियमावली के रूप में चार ऋषियों के माध्यम से दिया था अर्थात् इस वैदिक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अवधारणा में पूरी सृष्टि, पूरी धरती और इसके सभी देश आ जाते हैं। अन्य सभी मत-मतान्तर तो किसी ना किसी स्वार्थ की भावना के वशीभूत प्रतिक्रिया स्वरूप चलाए गए हैं। संस्कृति में मनुष्य के आन्तरिक जीवन मूल्य और नैतिकता आती है जो सत्य होने के कारण सदा अपरिवर्तनीय रहते हैं। सभ्यता तो उस संस्कृति के बाह्य चिह्नों का नाम है। हम नागरिकों के लिए अपने पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति के यथार्थ ज्ञान का होना अत्यन्त आवश्यक है।

तीसरा गुण है **उग्रं** अर्थात् क्षात्र तेज जो कि देश के भोगोलिक सीमाओं की रक्षा और उसके विस्तार के लिए अत्यन्त आवश्यक है। बलशाली राष्ट के लिए उसके प्रत्येक नागरिक में आत्मिक, शारीरिक व सामाजिक बल का होना राष्ट्र की रक्षा के लिए आवश्यक है। चौथा गुण **तपः** अर्थात् धर्म का पालन और मनुष्य के रूप में हमारा धर्म मनुष्यता है। मनुष्य होने के लिए आवश्यक गुण हैं मननशील व विचारवान होना, सभी से स्वात्मवत् और यथायोग्य व्यवहार करना, निर्बल धर्मात्माओं का संरक्षण, दुष्टों को दण्ड देते हुए परोपकार के कार्य करना। हमारे धर्म का मूल सब सत्य विद्याओं का पुस्तक ईश्वरीय वाणी वेद है। अतः धर्म के

क्रमशः पृष्ठ 14 पर......

नववर्ष का भ्रम—पहली जनवरी

एक जनवरी को नववर्ष की शुभकामना देने से पहले जरा सोचें

पहली जनवरी का दिन ऐसा दिन है कि न तो इस दिन से सूर्य अपना अयन बदलता है, न यह वर्ष का सबसे छोटा दिन है, न बड़ा। न इस दिन कोई नक्षत्र उदय या अस्त होता है। न नई फसल आ रही होती है न ऋतु। विश्वभर में कोई सरकार इस दिन या इस महीने में नया बजट तैयार नहीं करती, न ही प्रस्तुत करती है। जिन देशों में यह कालान्तर (कलैण्डर) पहले चालू हुआ वहां भी इस दिन कोई नई बात देखने में नहीं आती। वे देश भी एप्रिल से नए बजट लागू करते हैं। प्राय: शिक्षा सत्र भी एप्रिल से प्रारम्भ होते हैं। एप्रिल का अर्थ 'प्रस्फुटन' होना अर्थात् नई कली फूटना है। एप्रिल में ही भारतीय प्रथम मास चैत्र प्राय: 10-15 दिन के अन्तर से आता है। भारतीय चैत्र से प्रारम्भ होने वाले कलैण्डर में तथा यूरोपीय अप्रैल से प्रारम्भ होने वाले कलैण्डर में काफी समानता है। यूरोपीय कलैण्डर में आठ महीनों के नाम किसी राजा या देवता के नाम से बदल दिए गए हैं। शेष चार मास ज्यों के त्यों आज भी संस्कृत के शब्दों में विद्यमान हैं,ये मास हैं-सितम्बर-सताम्बर (सातवां मास), अक्तूबर-अष्टाम्बर (आठवां मास), नवम्बर-नवाम्बर (नौवां मास), दिसम्बर-दशाम्बर (दसवां मास)। दोनों कलैण्डरों में अप्रैल व चैत्र प्रथम मास हैं। वास्तव में चैत्र या अप्रैल से प्रारम्भ कलैण्डर ही सही है। जनवरी से आरम्भ किया जाने वाला कलैण्डर स्वत: ही नकली दिखाई पड़ता है। यह थोपा गया है वास्तविक नहीं है। प्राकृतिक, वैज्ञानिक व भौगोलिक वास्तविकताओं से दूर है। युवाओं को हो-हल्ला करने का एक मौका इस दिन मिल जाता है। उन्हें और बातों व तथ्यों से कुछ लेना-देना नहीं है। दुकानदारों व व्यापारियों को नए साल के बहाने अपनी चीजें बेचने का एक मौका और मिल जाता है अत: उन्हें भी और बातों से कुछ लेना-देना नहीं है, लेकिन प्रबुद्धजनों को इस भेड़चाल को रोकने का यत्न करते रहना चाहिए। यह चैत्र या अप्रैल का समय ही ऐसा है जिसमें ऋतु परिवर्तन होता है। फसलें आने लगती हैं। पूरे विश्व की प्रकृति में प्राय: नव-प्रस्फुटन इसी समय होता है। दक्षिण की ओर सागर भाग अधिक है तथा उत्तर की ओर स्थल व पर्वतीय भाग अधिक है। अत: उत्तरायण की ओर सूर्य आने पर पृथ्वी के थल भाग में गर्मी बढ़ने से घास से लेकर पेड़-पौधों तक में नव-प्रस्फुटन होता है। कोयल कूकती है और मोर नाचते हैं। आम, जामुन आदि व पकती फसलों की खुशबू सर्वत्र फैल जाती है। हर जीव-जन्तु में उमंग होती है। इसी वसन्त ऋतु में नई कोशिकाओं का निर्माण होता है। निर्विवाद रूप से चैत्र/अप्रैल में वर्ष आरम्भ होता है। पहली जनवरी को वर्षारम्भ मानना अज्ञानता व भेड़चाल है। इकत्तीस दिसम्बर की आधी रात को बम फोड़कर प्रदूषण फैलाना, हो-हल्ला करना, युवकों व मूर्खों द्वारा समुद्र तटों व अन्य स्थानों पर युवतियों से अभद्रता करना पूरी मानवता पर धब्बा है। भारतीय नववर्ष व अन्य पर्व पवित्रता से प्रभुस्मरण, संकल्प, स्नान, दान व यज्ञों द्वारा मनाए जाते हैं। हम भारतीयों को अपनी महान् मर्यादाओं को भंग नहीं होने देना चाहिए। विदेशी विकृति में फंसकर अपनी श्रेष्ठ संस्कृति का अपमान नहीं करना चाहिए। हम एक ओर श्रद्धा से पितरों का स्मरण कर श्राद्ध करते हैं, लेकिन दूसरी ओर महान् पितरों की संस्कृति को चूर-चूर करके पितृ अपमान करते हैं। विश्व की मुख्य फसलें चैत्र के आसपास ही पक कर आती हैं जिनके आधार पर विश्व सरकारें बजट बनाती हैं। सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118 चल रहा है। यह भी चैत्र से आरम्भ हुआ था। आज तक चला आ रहा है तथा चैत्र से प्रतिवर्ष आरम्भ हो जाता है। भरत खण्ड (प्राचीन अखण्ड भारत) जिसमें वर्तमान ईरान से कैशपीयन सागर के देश व म्यांमार, जावा, सुमात्रा, लंका, वियतनाम, कम्बोडिया आदि देश आते थे। विक्रमादित्य सम्राट् चैत्र प्रतिपदा को ही सिंहासन पर बैठे थे। उनका विक्रमी संवत् आज भी चैत्र से ही आरम्भ होता है। फाल्गुन पूर्णिमा को वर्ष समापन होता है। इस दिन पूरे देश में होली मंगलाई जाती है। वसन्त पंचमी से ही होली की पवित्र समिधाएं (लकड़ियां) एकत्र की जाने लगती हैं। यह एक विशाल सामूहिक यज्ञ का प्रतीक है, जो फसलों को सुरक्षित पकाने के लिए किया

जाता था कि असामयिक वर्षा व ओले न गिरें। ऐसी औषधियां व जड़ी-बूटियां यज्ञ में डाली जाती थी कि फसल सुरक्षित रूप से कटकर खलिहान से घर में आ जाए। समयानुसार यज्ञों की आस्था घटती गई। युद्ध, काट-मार लूट-पाट में सर्वनाश हो गया, लेकिन कुछ बातें प्रतीक रूप में, परम्परा रूप में, धर्म के बन्धन रूप में चली आ रही हैं। शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान शोध समाप्त हो गए। धीरे-धीरे फिर हो रहे हैं। होली के अगले दिन ही नववर्ष की उमंग में दुल्हैण्डी (द्वन्द्वी) अर्थात् प्रतियोगिताएं मनाई जाती हैं। पूरे फाल्गुन मास में ही पुरुष-स्त्री जलक्रीड़ा (फाग) खेलते देखे जाते हैं। दुल्हैण्डी व होली के फाग बड़े प्रसिद्ध हैं। प्राचीन समय में इस दिन अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएं होती थीं। दौड़, कुश्ती, खेल, घुड़दौड़, बैलगाड़ी दौड़, रथदौड़, निशानेबाजी आदि। आजकल भी कहीं-कहीं प्रतियोगिताएं प्रचलित हैं, लेकिन रंग व जलक्रीड़ा ज्यादा प्रचलित हो गई हैं। कीचड़ तक फैकते हैं लेकिन दुल्हैण्डी का पर्व तो हमारा नववर्ष का त्यौहार है। हम इसे भूल गए हैं और इसमें सुधार की बजाय बिगाड़ हो रहा है तथा जनवरी से नववर्ष मनाने की एक अलग बीमारी और लगा ली है। सर्दी में ठिठुरते हुए कहते हैं-'हैप्पल न्यू इयर'। न स्वभाषा है, न संस्कृति, न खान-पान। पहली जनवरी को होटलों में शराब व गन्दे नृत्यों की भरमार रहती है। यह महान् पुष्ट संस्कृति वाले भारत के लिए कलंक के समान है। चैत्र (अप्रैल) के स्थान पर जनवरी को नववर्ष के रूप में जूनियस द्वितीय ने अपनी विशाल भूभाग पर विजय के उपलक्ष्य रूप में मनाना आरम्भ किया था तथा कुछ वर्ष बाद अप्रैल के स्थान पर कलैण्डर में परिवर्तन कर विजय दिवस को ही वर्ष का पहला दिन बनाकर इस महीने का नाम भी अपने नाम पर जूनियस का 'जूनी' तथा जूनियर का 'यर' लेकर जूनियरी (जनवरी) जेनुअरी रखा। यह जनवरी का कलैण्डर अपने राज्य में लागू कर दिया। कालान्तर में क्षेत्र विजय के साथ-साथ राज्य भी बढ़ता गया और राज्य के साथ-साथ कलैण्डर भी चलता गया। आज विश्व के अनेक देश इसी कलैण्डर को मान रहे हैं लेकिन अपने कलैण्डर अलग-अलग भी हैं। भारत में आज देशीय तिथियों से ही सभी सामाजिक व धार्मिक कार्य चलते हैं। भले ही सरकार जनवरी के कलैण्डर को मान रही है तथा यूरोपीय देशों में भी एप्रिल को भी 'एप्रिल फूल' कहकर मनोरंजन से मनाते हैं तथा सभी कार्य बजट शिक्षा सत्र आदि एप्रिल से ही आरम्भ करते हैं। इस प्रकार वे एक वर्ष में दो वर्ष मना रहे हैं एक ही वर्ष के लिए दो वर्ष लिखने पड़ रहे हैं। जैसे-2008-9, 2010-11 आदि। जब एक वर्ष के आंकड़े देने हैं तो दो वर्षों का उल्लेख क्यों? पूरा विश्व आंख मूंदकर लकीर पीट रहा है। अति आश्चर्य की बात है। जब सभी कार्य अप्रैल से मार्च तक सम्पन्न हो रहे हैं तो जनवरी किस बात का वर्ष है? 'संयुक्त राष्ट्रसंघ' को जनवरी से वर्ष प्रारम्भ को प्रतिबन्धित कर देना चाहिए। अप्रैल से ही नववर्ष वैधानिक मानना चाहिए। कोई पहली जनवरी को जूनियस 'विजय दिवस' मनाना चाहे तो भले ही अपने राजा की स्मृति में मनाये। यह वर्ष प्रारम्भ तो है नहीं। प्राकृतिक होने से एप्रिल को भी ये लोग छोड़ नहीं पा रहे हैं। इन्होंने इसका नाम वित्तवर्ष रख दिया है तथा जनवरी को भी नववर्ष रूप में प्रचलित किए हुए हैं लेकिन हम भारतीय भी पता नहीं क्यों? उनकी जूठन चाटकर प्रसन्न होते हैं? यह कोरी मूर्खता ही कही जाएगी कि जब हम दुल्हैण्डी को नववर्ष रूप में चैत्र में मना चुकते हैं फिर जनवरी में क्यों बेशर्म होकर नए साल की मुबारकवाद या 'हैप्पी न्यू ईयर' कहते हैं? एक स्वाभिमानी भारतीय को एक जनवरी को 'नववर्ष की शुभकामना' नहीं देनी-लेनी चाहिए। हमें अपनी स्वाभिमान की रक्षा करनी चाहिए। स्वाभिमान को कभी नहीं गिरने देना चाहिए। हमारा स्वाभिमान छोटी-छोटी बातों पर झूठे अहंकार रूप में प्रकट होता रहता है लेकिन देश की महान् संस्कृति, भाषा, खान-पान, पहरान की रक्षा के लिए वह क्यों नहीं जागता? देश के नाम दो? राष्ट्रगान दो, राष्ट्रभाषा दो, पहनावे दो, खान-पान दोहरे, संस्कृति दोहरी, कब आएगी एकता, अखण्डता, दृढ़ता की शक्ति? निज पहचान, निज शिक्षा, निज रोजगार, निज संस्कृति का गौरव? सच्ची मानव संस्कृति व देवत्व संस्कृति का परचम कब लहराएगा? युवको! सोचो!! इस जूनियस द्वितीय के 'विजयोत्सव' रूपी नववर्ष को मनाना कब छोड़ोगे?

-वैदिक विश्व न्यास, आर्य चौपाल,
गली नं० 9-10, हैफेड रोड, रोहतक

प्रेरक वचन

- अनावश्यक संकल्प के त्याग में ही आवश्यक संकल्प की पूर्ति निहित है।
- संकल्प निवृत्ति की शान्ति, सुख की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्व की वस्तु है।
- संसार के काम आने पर ही संसार की दासता से रहित हो सकते हैं।
- निर्दोष वही हो सकता है, जिसे केवल अपने दोष का दर्शन होता है।
- अहं के नाश में अनन्त सामर्थ्य निहित है।
- उस सुख का त्याग कर दो, जो किसी का दु:ख हो।
- कार्य उसी का सिद्ध होता है, जो दूसरों के काम आता है।
- मोहयुक्त क्षमा, क्रोधयुक्त त्याग तथा लोभयुक्त उदारता निरर्थक है।
- अपने दु:ख का कारण अपने से भिन्न किसी और को नहीं समझना चाहिए।
- अशुद्ध संकल्पों के त्याग में ही शुद्ध संकल्पों की उत्पत्ति होती है।
- सत्य जीवन की जितनी रक्षा करता है, उतनी और कोई नहीं कर सकता।
- अहिंसा की प्रतिष्ठा में ही क्षमता, शीलता, अक्रोध आदि गुणों की अभिवृद्धि होती है।

भेंटकर्त्ता : भलेराम आर्य, गांव-सांघी, जिला रोहतक

आर्यसमाज का वार्षिक सम्मेलन

आर्यसमाज तिलक नगर रोहतक का दो दिवसीय वेदप्रचार का कार्यक्रम 3 और 4 फरवरी 2018 को धर्मशाला तिलकनगर में होगा जिसमें भारत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं० वेदपाल बड़ौत वाले और भजनोपदेशक श्री कुलदीप विद्यार्थी, बिजनौर से पधारेंगे।

–सुभाष आर्य, आर्यसमाज तिलक नगर रोहतक
मोबाइल 9466258105

राष्ट्र-निर्माण.... पृष्ठ 11 का शेष.....

पालन के लिए वेदज्ञान होना भी आवश्यक है। पांचवां गुण है **दीक्षा** अर्थात् कार्य करने में दक्षता। **योग: कर्मसु कौशलम्** कहते हुए योगेश्वर कृष्ण ने कार्यों में कुशलता वा दक्षता को ही योग कहा है। अत: राष्ट्र की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए उसके नागरिकों को अपने अपने कार्यों में पूर्णतया कुशल व दक्ष होना आवश्यक है। छठा गुण है **ब्रह्म** अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान। इसके अन्तर्गत हम मनुष्यों को जीवात्मा परमात्मा के सत्य स्वरूप और संबंधों का सत्य ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। उस एक सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, दयालु, न्यायकारी, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, अजर, अमर, अनुपम, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता ईश्वर का बोध होना अत्यन्त आवश्यक है। इससे हम धार्मिक आडम्बरों, मत-मदान्तरों के मकड़जाल से बचकर एक सूत्र में बंधकर पाखण्डियों के शोषण से बच सकते हैं। सातवां गुण **यज्ञ:** जिसे देव दयानन्द ने हम सभी के लिए नित्यकर्म निर्धारित किया है और इस यज्ञ को मनुष्य अपने जीवन में धारण करे तथा अपने आत्मा में ज्ञान की अग्नि को उद्बुध करके प्रत्येक श्वास प्रति श्वास के साथ सद्कर्मों की आहुति देता रहे। इस यज्ञ में दान, त्याग व परोपकार की भावना समाहित होती है। यदि राष्ट्र के नागरिक के रूप में इन गुणों को धारण करके परस्पर सौहार्द, समरसता और प्रेम के अटूट बंधन में बंध जाएं तो उन्नत राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

आवश्यक सूचना

आर्यसमाज रसूलपुर के प्रधान श्री हितलाल जी पटवारी का निधन दिनांक 3.12.2017 को हो जाने के बाद सभा का सर्वसम्मति से चुनाव किया गया जो इस प्रकार है–प्रधान-श्री हरफूलसिंह, मन्त्री-श्री सुरेन्द्रपाल आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री सोमदत्त आर्य।

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. गुरुकुल हरिपुर जुनानी पो० गोड़फूला जिला नुआपड़ा (ओड़िशा) 27 से 29 जन० 2018
2. आर्यसमाज रसूलपुर जिला महेन्द्रगढ़ 10 से 11 फर० 2018
3. आर्यसमाज आहुलाना जिला सोनीपत 12 से 14 फर० 2018
4. आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल 22 से 25 फर० 2018

–रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

समाचार-प्रभाग

जिला हिसार में सभा के रथ के माध्यम से वेदप्रचार मण्डल द्वारा वेदप्रचार किया गया

ग्राम गोरछी में 14.11.17 को स्कूल व गांव में वेदप्रचार किया गया। 15 नवम्बर को सैनिक स्कूल में वेदप्रचार किया गया। 16 नवम्बर को कोश मोस स्कूल गंगवा में प्रचार किया गया। 17 नवम्बर को लक्ष्य पब्लिक स्कूल में प्रचार किया गया। 18 नवम्बर को राजकीय माध्यमिक विद्यालय गंगवा में प्रचार किया गया। 18 नवम्बर को हिन्दू पब्लिक स्कूल चौधरीवास में प्रचार किया गया। 19 नवम्बर को वांडाहेड़ी गांव में दो स्कूलों में प्रचार किया गया। गांव डोभी में कन्या गुरुकुल व प्राइवेट स्कूल में प्रचार किया गया। 22 नवम्बर को भिवानी रोहिल्या में सरकारी स्कूल में प्रचार किया गया। 28 नवम्बर को डीएवी पब्लिक स्कूल में प्रचार किया गया। 29 नवम्बर को बुढला स्कूल में प्रचार किया गया। 30 नवम्बर को माध्यमिक कन्या विद्यालय में प्रचार किया गया। 6 दिसम्बर को लुदास स्कूल में प्रचार किया गया। 7 दिसम्बर को ढांढ गौशाला में प्रचार किया गया। 8 दिसम्बर को जाकोद गांव के स्कूल में प्रचार किया गया। 9 दिसम्बर को स्याहड़वा गांव के स्कूल में प्रचार किया गया। 10 दिसम्बर को डोभी गांव के स्कूल में प्रचार किया गया। 11 दिसम्बर को धानसु के सरकारी व प्राइवेट स्कूल में प्रचार किया गया। 12 दिसम्बर को सैक्टर-14 में इंडियन स्कूल में प्रचार किया गया। 13 दिसम्बर को गांव मिगनी खेड़ा माध्यमिक स्कूल में प्रचार किया गया। इस गांव में सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता रमेश आर्य भी पधारे। उन्होंने भी अपने विचार रखे। 14 दिसम्बर को सुण्डावास गांव के स्कूल में प्रचार किया। 15 दिसम्बर को रामपुर गांव के सरकारी स्कूल में प्रचार किया गया। गांव शिशवाला रालवास खुर्द न्यौली कलां, न्यौली खुर्द तथा आईटीआई आर्यनगर अन्य गांव में प्रचार किया गया।

उपरोक्त विद्यालयों में वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष रामकुमार आर्य तथा आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक सत्यपाल मधुर, संजीत शास्त्री की विशेष भूमिका रही। इनके अतिरिक्त वेदप्रचार मण्डल के संरक्षक वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही तथा मण्डल के बौद्धिक अध्यक्ष आचार्य प्रमोद योगार्थी भी कई स्कूलों में पधारे। उपरोक्त विद्वानों ने आध्यात्मिक, नैतिक शिक्षा, सुखी गृहस्थ, ऋषि दयानन्द के जीवन व कार्य पर आर्यसमाज क्या है, क्या चाहता है, आर्यसमाज की देश के लिए योगदान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, भारतीय संस्कृति, सभ्यता, भ्रूणहत्या, गोरक्षा तथा शराबबन्दी पर विचार रखे। वेदप्रचार के कार्य का सार्थक प्रतिक्रिया मिली। सभा का यह रथ जिला हिसार, फतेहाबाद, सिरसा के लिए मिला हुआ है। 7 जनवरी से फतेहाबाद में प्रचार कार्य प्रारम्भ होगा।

कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मंत्री वेदप्रचार मण्डल, हिसार

योग-ध्यान, साधना शिविर

जम्मू काश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू काश्मीर में आश्रम के मुख्य-संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्य स्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनांक 8 से 15 अप्रैल, 2018 तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाएगा। इस अवसर पर वैदिक प्रवचन तथा योगदर्शन एवं उपनिषदादि पर भी व्याख्यान होंगे। शिविर में युवा एवं प्रभावशाली वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी,स्वामी नित्यानन्द जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी के ब्रम्हत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य स्वामी जी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं, इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं0 09419107788, 09419796949 व 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

-भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान।

दयानन्दमठ रोहतक का मासिक सत्संग सम्पन्न

रोहतक (07 जनवरी, 2018)। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक में प्रतिमास के प्रथम सप्ताह में होने वाले मासिक वैदिक सत्संग का शुभारम्भ प्रात: 9 बजे यज्ञ द्वारा किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सर्वमित्र आर्य प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा थे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक पं० कुलदीप भास्कर, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कोषाध्यक्ष बहन श्रीमती सुमित्रा आर्या, बहन दया आर्या आदि ने ईश्वरभक्ति एवं ऋषिवर देवदयानन्द जी के गीतों से भावविभोर कर दिया। सभा के यशस्वी प्रधान मा० रामपाल आर्य ने मासिक सत्संग में उपस्थित आर्य महानुभावों से अपील करते हुए बताया कि दयानन्दमठ रोहतक में भव्य '**स्वामी स्वतन्त्रानन्द बहुउद्देश्यीय सभागार**' का निर्माण किया जा रहा है जिसमें लगभग डेढ़ करोड़ रुपये की लागत आएगी। इससे पहले गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद में '**स्वामी स्वतन्त्रानन्द ग्लोबल स्कूल**' का निर्माण किया गया। इसी प्रकार वेदप्रचार अभियान में पुस्तक आदि वितरित करके खर्च किया जा रहा है। उन्होंने आर्यजनों से अपील करते हुए यह भी कहा कि रामपालदास के अनुयायी करौंथा, बरवाला के बाद अब दोबारा कुछ सरपंच भाइयों को बहकाकर अपना स्थान बनाना चाहते हैं। हमारी सभी सरपंचों से अपील है कि उन्हें अनैतिक कार्य के लिए स्थान न दें।

मासिक सत्संग में इस अवसर पर उपस्थित निम्नलिखित चार सरपंचों एवं विशिष्ट अतिथियों को सम्मानित भी किया गया जिनमें-श्री राकेश जी सरपंच, सुन्दरपुर अठगामा, श्री सुमित आर्य सरपंच, मकड़ौली (रोहतक), श्री डॉ० शमशेरसिंह, सिंहपुरा (रोहतक), श्री शिवकुमार सरपंच, डोभ, श्री रोशनलाल आर्य, रिठाल (रोहतक), श्री बलराज कुण्डु, चेयरमैन, जिला परिषद् रोहतक, श्री चांदसिंह चेयरमैन, ब्लाक लाखनमाजरा आदि को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के माननीय प्रधान मा० रामपाल आर्य, कोषाध्यक्ष बहन सुमित्रा आर्या, सभा के प्रस्तोता आचार्य सर्वमित्र आर्य सभा-वेदप्रचाराधिष्ठाता रमेश आर्य, श्री सुभाष सांगवान आदि ने सम्मानित किया।

आज के मुख्यवक्ता प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् **डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार** (कुरुक्षेत्र) ने वेद का पावन मंत्र प्रस्तुत करते हुए मानव जीवन के संदर्भ में बहुत ही सुन्दर एवं सरल शब्दों में अपने विचार रखे। उन्होंने आत्मिक बल के बारे में अनेक प्रमाण देकर समझाने का प्रयास किया। उन्होंने शारीरिक बल, आर्थिक बल, सत्ताबल और प्रतिष्ठा बल आदि सभी बलों से श्रेष्ठ आत्मिक बल पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि सत्य सिद्धान्तों पर आधारित होकर ईश्त्रर पर पूर्ण विश्वास करके आत्मिक बल प्राप्त किया जा सकता है। इस विषय पर उन्होंने अनेक प्रमाण भी प्रस्तुत किए। उन्होंने ऐतिहासिक कार्यों की चर्चा करते हुए मानव शरीर को स्वाध्याय एवं सत्संग से जोड़ने का भी प्रयास किया और कहा कि हम आर्यों को पुरुषार्थ एवं शुभ कर्म करते हुए तथा अच्छे लोगों के सत्संग में आकर अपने जीवन को बदलना चाहिए।

मंच का कुशल संचालन आचार्य अभय आर्य, निदेशक आर्य बाल भारती स्कूल, जी.टी. रोड, पानीपत ने किया। मंच पर उपस्थित सभी विद्वान्, साधु-सन्त एवं सभी सत्संग-प्रेमियों का सत्संग में पधारने पर हार्दिक धन्यवाद किया।

63 पत्रकारों और 193 मातृभाषा सत्याग्रहियों की पैंशन को मंजूरी

चंडीगढ़। सूचना, जनसम्पर्क और भाषा मंत्री कविता जैन ने कहा कि राज्य सरकार ने राज्य में 63 पत्रकारों और 193 मातृभाषा सत्याग्रहियों की पैंशन को मंजूरी दी है। कविता जैन ने यह जानकारी विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की एक बैठक की अध्यक्षता करते हुए दी।

उन्होंने कहा कि इसके तहत पात्र लाभार्थियों को 10,000 रुपये प्रतिमाह दिए जायेंगे। विभाग की कार्यप्रणाली की समीक्षा करते हुए जैन ने मुख्यालय और क्षेत्रीय कार्यालयों के लिपिकीय कर्मचारियों का एक समान काडर तैयार करने की संभावनाओं का पता लगाने के निर्देश दिए। मंत्री कविता जैन ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों का प्रचार करने के लिए सोशल मीडिया का व्यापक उपयोग करें। उन्होंने 'सक्सैस स्टोरीज' पर विशेष बल देने के निर्देश देते हुए कहा कि क्षेत्रीय अधिकारियों ने हर हफ्ते ऐसी कहानी सुनिश्चित करनी चाहिए। सूचना, जनसम्पर्क और भाषा विभाग के निदेशक समीर पाल सरो ने कहा कि मीडियाकर्मियों के पैंशन के मामलों को डील करने के लिए गठित कमेटी मास के दौरान आए ऐसे सभी मामलों का निपटान के लिए मास के दूसरे बुधवार को बैठक करेगी ताकि बिना किसी विलम्ब के पैंशन जारी की जा सके।

अशोक विहार मालवीय नगर सोनीपत में वेद प्रचार समारोह में सभामंत्री श्री उमेद सिंह।

अशोक विहार मालवीय नगर सोनीपत में वेद प्रचार करते हुए।

गांव दोदवा में वेद प्रचार करते हुए श्री रमेश आर्य एवं अन्य।

गांव दोदवा में यज्ञ से वेद प्रचार प्रारम्भ करते हुए।

गांव सुंडाना में वेद प्रचार करते हुए श्री रमेश आर्य, श्री सुभाष आर्य, श्री रोशन आर्य व अन्य।

स्वामी श्रद्धानन्द विद्यालय बड़वासनी में वेद प्रचार करते हुए श्री रमेश आर्य व अन्य।

संस्कृत महाविद्यालय चरखी दादरी में हुई महापंचायत में अपने विचार रखते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

महापंचायत में उपस्थित जनप्रतिनिधि।

ओ३म्

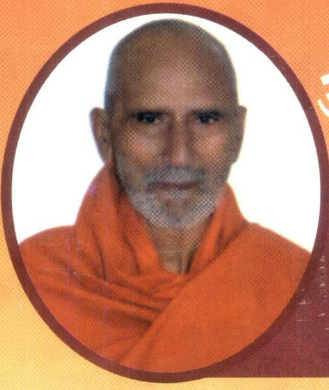

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

के तत्त्वावधान में आचार्य बलदेव स्मृति दिवस पर आयोजित

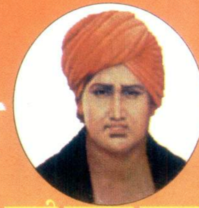

स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

आचार्य देवव्रत
महामहिम राज्यपाल हि.प्र.

श्री गंगा प्रसाद
महामहिम राज्यपाल मेघालय

डा० सत्यपाल सिंह
मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार

कैप्टन अभिमन्यु
वित्त मंत्री, हरियाणा सरकार

श्री कर्णदेव कम्बोज
खाद्य मंत्री, हरियाणा सरकार

स्थान - दयानन्द मठ रोहतक | समय - प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक

दिनांक - 28 जनवरी 2018

आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :- आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ रोहतक

8901387993, 9416874035, 9911197073, 9416503513, 9813235339, 8199938001, 9466845332

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

श्री ....

पता ....

....

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा